13

समास स्वर

स्वर सहित वेदों का अध्ययन करना चाहिए। तीन स्वर हैं। उदात्त, अनुदात्त और स्वरित। प्रत्येक स्वरों में एक-एक चिह्न है। जैसे अग्निमीळे यहाँ पर अकार अनुदात्त है। अकार के नीचे विद्यमान रेखा अकार के अनुदात्त होने का बोध कराती है। ग्नि यहाँ इकार उदात्त है। उदात्त के लिए किसी भी चिह्न का प्रयोग नहीं किया है। चिह्न विहीन उदात्त होता है। मी यहाँ ईकार स्वरित है। ईकार के ऊपर में विद्यमान रेखा स्वरित का ज्ञान कराती है। इस प्रकार अच् के तीन स्वर सम्भव है। प्रत्येक वर्णों के स्वर प्रत्यय योग से समास करने से इत्यादि हेतु से बदलते हैं। इस प्रकरण में समास स्वर के विषय में जानेगें। अर्थात् समास करने से कहाँ क्या स्वर होता है, उसकी आलोचना करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- समास के अन्त में होनें वाले स्वर को जान पाने में;
- तत्पुरुष समास में पूर्वपद के स्वर विधान कर पाने में;
- कर्मधारय समास में पूर्व पद के स्वर का निर्णय कर पाने में;
- बहुव्रीहि समास में पूर्व पद के स्वर का निश्चय बोध कर पाने में;
- द्विगु समास में किस पद का क्या स्वर होता है इस विषय में जान पाने में;
- प्रकृति स्वर कहाँ कहाँ पढ़े गए इसको जान पाने में;
- सूत्रों के अर्थ निर्णय कर पाने में;
- सूत्रों की व्याख्या कर पाने में।

टिप्पणियाँ

13.1 समासस्य॥ (६.१.२२३)

सूत्र का अर्थ- समास का अन्त उदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से उदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में एक ही पद है। समासस्य यह षष्ठ्यन्त पद है। ''अन्त्योऽवत्या:'' इस सूत्र से अन्त: इस पद की अनुवृति आती है। उदात्त: इस पद की यहाँ अनुवृति आती है। अत: सूत्र का अर्थ है - समास का अन्त उदात्त होता है। उदात्त आदि तो अच् को ही सम्भव है। अत: अन्तिम अच् उदात्त होता है यह अर्थ है।

उदाहरण- राजपुरुष:

सूत्र अर्थ का समन्वय-राज्ञ: पुरुष: इस विग्रह में ''षष्ठी'' इस सूत्र से षष्ठीतत्पुरुष समास होने पर राजपुरुष: यह रूप होता है। समास होने से प्रकृत सूत्र से राजपुरुष इसका अन्तिम अकार उदात्त होता है।

13.2 तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्ययद्वितीयाकृत्याः॥ (६.२.२)

सूत्र का अर्थ- तत्पुरुष समास में तुल्य अर्थवाले, तृतीयान्त, सप्तम्यन्त, उपमानवाची, अव्यय, द्वितीयान्त तथा कृत्यप्रत्ययान्त जो पूर्वपद में स्थित शब्द है, उन्हें प्रकृति स्वर होता है।।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्रकृति स्वर का विधान है। प्रकृति शब्द का अर्थ स्वाभाविक है। प्रकृति स्वर का नाम स्वाभाविक स्वर है। जिसका वह प्रकृति स्वर। अर्थात् समास से पूर्व पद का जो स्वाभाविक स्वर है, समास से बाद में वह ही स्वर रहता है। इस सूत्र में दो पद हैं। तत्पुरुष यह सप्तम्यन्त पद है। तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्यय -द्वितीयाकृत्या: यह प्रथमान्त पद है। 'बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम्' इस सूत्र से प्रकृत्या और पूर्वपदम् इन दो पदों की अनुवृति आती है। सूत्र का अर्थ है तत्पुरुष समास में तुल्य अर्थवाले, तृतीयान्त, सप्तम्यन्त, उपमानवाची, अव्यय द्वितीयान्त और कृत्यप्रत्ययान्त पूर्वपद प्रकृति स्वर होता है। प्रकृत्या इसका अर्थ स्वभाव से। अर्थात् तत्पुरुष समास में पूर्वपद यदि तुल्यार्थवाचक, तृतीयान्त, सप्तम्यन्त, उपमानवाचक, अव्यय, अथवा कृत्यप्रत्ययान्त हो तो पूर्वपद को प्रकृति स्वर होता है। पूर्वपद का स्वर परिवर्तन नहीं होता है।

उदाहरण- तुल्यश्वेत:। किरिकाण:। अक्षशौण्ड:। शस्त्रीश्यामा।

सूत्र अर्थ का समन्वय- तुल्यश्वेत:- यहाँ कृत्यतुल्याख्या अजात्या इस सूत्र से कर्मधारय समास हुआ है। यहाँ पूर्वपद को तुल्यार्थवाचक है, किन्तु यतोऽनाव: इस सूत्र से आद्युदात्त है। अत: प्रकृत सूत्र से तुल्यश्वेत: यहाँ समस्त पद का तुल्य यह पद आद्युदात्त है।

किरिकाण:- किरिणा काण: इस विग्रह में तृतीयातत्पुरुष समास में किरिकाण: यह रूप बनता है। यहाँ किरि यह अन्तोदात्त पद है। अत: प्रकृत सूत्र से किरिकाण: यहाँ किरि यह अन्तोदात्त होता है।

अक्षशौण्डः- अक्षेषु शौण्डः इस विग्रह में सप्तमीतत्पुरुष समास करने पर अक्षशौण्डः यह रूप बनता है। अक्ष शब्द अन्तोदात्त है। अतः अक्षशौण्ड यहाँ पर अक्ष शब्द अन्तोदात्त ही रहता है।

शस्त्रीश्यामा- शस्त्री इव श्यामा इस विग्रह करने पर उपमानानि सामान्यवचनैः इस सूत्र से तत्पुरुष समास हुआ। शस्त्री शब्द अन्तोदात्त है। अतः प्रकृत सूत्र से शस्त्रीश्यामा यहाँ पर शस्त्री यह अन्तोदात्त ही रहता है।

अब्राह्मणः- न ब्राह्मणः इस विग्रह में नञ्तत्पुरुष समास में अब्राह्मणः यह रूप होता है। यहाँ पूर्वपद नञ् यह निपात है, निपाताः आद्युदात्ताः इस सूत्र से आद्युदात्त है। अतः प्रकृत सूत्र से अब्राह्मणः यहाँ पूर्वपद आद्युदात्त ही रहता है।

मुहूर्तसुखम्- मुहूर्त सुखम् इस विग्रह में अत्यन्त संयोगे च इस सूत्र से द्वितीयातत्पुरुष समास हुआ। यहाँ पूर्वपद द्वितीयान्त और अन्तोदात्त है। अतः प्रकृत सूत्र से मुहूर्तसुखम् यहाँ पूर्वपद को अन्तोदात्त ही रहता है।

भोज्योष्णम्- भोज्यं च तत् उष्णम् इस विग्रह में कर्मधारय संज्ञक तत्पुरुष समास हुआ। भोज्यम् यह कृत्यप्रत्ययान्त पद और स्वरित है। अतः भोज्योष्णम् इस समस्त पद का भोज्य शब्द स्वरित ही रहता है।

13.3 वा भुवनम्॥ (६.२.२०)

सूत्र का अर्थ- ऐश्वर्यवाची तत्पुरुष समास में पति शब्द उत्तरपद रहते पूर्वपद को विकल्प से प्रकृति स्वर हो जाता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्रकृतिस्वर का नियम किया गया है। इस सूत्र में दो पद है। वा यह अव्ययपद है। भुवनम् यह प्रथमान्त पद है। ''पत्यावैश्वर्ये'' इसकी यहाँ अनुवृति आती है। ''बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम्'' इस सूत्र से प्रकृत्या और पूर्वपदम् इन दो पदों की अनुवृति आती है। ''तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्ययद्वितीयाकृत्याः'' इस सूत्र से तत्पुरुष इसकी अनुवृति आती है। ऐश्वर्ये इसका तत्पुरुषे इसके साथ अन्वय है। उत्तरपदे इस पद को यहाँ जोड़ा गया है। और उसका पत्ति इस शब्द के साथ अन्वय किया है। अतः सूत्र का अर्थ है - ऐश्वर्यवाची तत्पुरुष समास में पति शब्द के उत्तर पद में होने पर पूर्वपद भुवन शब्द को विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है।

उदाहरण- भुवंनपतिः। भुवनपतिः।

सूत्र अर्थ का समन्वय- भुवनपतिः यहाँ भुवनस्य पतिः इस विग्रह में तत्पुरुष समास हुआ है। यहाँ भुवन शब्द पूर्वपद है। और पति शब्द उत्तरपद है। अतः प्रकृत सूत्र से भुवन शब्द को विकल्प से प्रकृति स्वर होता है। उसे प्रकृति स्वर पक्ष में आद्युदात्त होता है।

13.4 पूर्वे भूतपूर्वे॥ (६.२.२२)

सूत्र का अर्थ- पूर्व शब्द के उत्तरपद रहते भूतपूर्ववाची तत्पुरुष समास में पूर्वपद को प्रकृति स्वर हो जाता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्रकृतिस्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद विराजमान है। पूर्वे यह सप्तम्यन्त पद है। भूतपूर्वे यह भी सप्तम्यन्त पद है। बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् इस सूत्र से प्रकृत्या और पूर्वपदम् इन दोनों पदों की यहाँ अनुवृत्ति आ रही है। उत्तरपदे इसको यहाँ जोड़ा गया है। और उस उत्तरपद को पूर्वे इस पद के साथ अन्वय किया गया है। अत: सूत्र का अर्थ है - पूर्व शब्द के उत्तरपद रहते भूतपूर्ववाची तत्पुरुष समास में पूर्वपद को प्रकृति स्वर होता है।

उदाहरण- आढ्यपूर्व:।

सूत्र अर्थ का समन्वय- आढ्य: भूतपूर्व: इस विग्रह में आढ्यपूर्व: यह रूप बनता है। यहाँ पूर्व शब्द भूतपूर्व अर्थ में है। पूर्व शब्द उत्तरपद भी है। अत: यहाँ प्रकृत सूत्र से आढ्य इस पूर्वपद को प्रकृति स्वर ही होता है।

पाठगत प्रश्न 13.1

1. समास का अन्त क्या होता है?
2. तुल्य शब्द आद्युदात्त अथवा अन्तोदात्त है?
3. अक्षशौण्ड: इसका विग्रह वाक्य क्या है?
4. भौज्योष्णम् यहाँ पूर्वपद को प्रकृति स्वर किस सूत्र से है?
5. वा भुवनम् इस सूत्र का क्या अर्थ है?
6. भुवनपति: यहाँ पर भुवन शब्द का स्वर क्या है?
7. पूर्वे भूतपूर्वे इस सूत्र से किसका विधान है?

13.5 विस्पष्टादीनि गुणवचनेषु॥ (६.२.२४)

सूत्र का अर्थ- गुण को कहने वाले शब्दों के उत्तरपद रहते विस्पष्टादि पूर्वपद को तत्पुरुष समास में प्रकृतिस्वर होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से पूर्वपद को प्रकृति स्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद विराजमान है। विस्पष्टादीनि यह प्रथमान्त पद है। गुणवचनेषु यह सप्तम्यन्त पद है। बहुव्रीहौ

प्रकृत्या पूर्वपदम् इस सूत्र से प्रकृत्या और पूर्वपदम् इन दो पदों की यहाँ अनुवृति आ रही है। उत्तरपदेषु इसका यहाँ अध्याहार किया गया है। अतः सूत्र का अर्थ होता है – गुण को कहने वाले शब्दों के उत्तरपद रहते विस्पष्टादि पूर्वपदों को प्रकृतिस्वर होता है।

उदाहरण– विस्पष्टकटुकम्।

सूत्र अर्थ का समन्वय– विस्पष्टं कटुकम् इस विग्रह में यहाँ समास है। कटुकम् यह गुणवाचक पद है। और वह उत्तरपद है। अतः प्रकृतसूत्र से विस्पष्टम् यहाँ इसका प्रकृतिस्वर होता है। विस्पष्ट शब्द गतिरनन्तरः इस सूत्र से आद्युदात्त है। उससे विस्पष्टकटुकम् यहाँ पर विस्पष्ट शब्द आद्युदात्त ही रहता है।

विशेष– विस्पष्टकटुकम् यहाँ कर्मधारय समास नहीं है। कर्मधारयसमास विशेष्य और विशेषण के मध्य में होता है। यहाँ विस्पष्टम् यह कटुक का प्रवृत्तिनिमित्त कटुकत्व है, उसका विशेषण है, कटुक का नहीं है। अतः यहाँ सामान्य समास ही स्वीकार करना चाहिए।

13.6 कुमारश्च॥ (६.२.२७)

सूत्र का अर्थ– पूर्वपद स्थित कुमार शब्द को भी कर्मधारय समास में प्रकृतिस्वर होता है।

सूत्र की व्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से पूर्वपद को प्रकृतिस्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद है। कुमारः यह प्रथमान्त पद है। च यह अव्ययपद है। बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् इस सूत्र से प्रकृत्या और पूर्वपदम् इन दो पदों की अनुवृति है। श्रज्यावमकन्पापवत्सु भावे कर्मधारये इस सूत्र से कर्मधारये इस पद की अनुवृति आती है। अतः सूत्र का अर्थ है कर्मधारय समास में पूर्वपद कुमार शब्द को प्रकृतिस्वर होता है।

उदाहरण– कुमारश्रमणा। कुमारकुलटा। कुमारतापसी।

सूत्र अर्थ का समन्वय– कुमारी च इयं कुलटा इस विग्रह में कर्मधारय समास में कुमारी इसका पुंवद् भाव करने पर कुमार कुलटा यह रूप बनता है। अन्तोदात्त कुमार शब्द यहाँ पूर्वपद है। अतः प्रकृत सूत्र से कुमारश्रमण यहाँ पर कुमार शब्द भी अन्तोदात्त ही रहता है।

13.7 बहवन्यतरस्याम्॥ (६.२.३०)

सूत्र का अर्थ– द्विगु समास में इगन्त आदि उत्तरपद रहते पूर्वपद बहु शब्द को विकल्प करके प्रकृत्तिस्वर होता है।

सूत्र की व्याख्या– यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्रकृतिस्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद है। बहु यह प्रथमान्त पद है। अन्यतरस्याम् यह अव्ययपद है। इगन्तकालकपालभगालशरावेषु द्विगौ इस सूत्र से इगन्तकालकपालभगालशरावेषु और द्विगौ इन दोनों पदों की यहाँ अनुवृति है। बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् इस सूत्र से प्रकृत्या और पूर्वपदम् इन दो पदों की यहाँ अनुवृति है। उत्तरपदेषु इस पद को यहाँ जोड़ा गया है। अतः सूत्र का अर्थ है द्विगुसमास में इगन्त, काल, कपाल, भगाल,

शराव इनके उत्तरपद रहते पूर्वपद बहु शब्द को विकल्प करके प्रकृतिस्वर होता है। यहाँ काल शब्द से कालवाचक शब्दों का ग्रहण होता है।

उदाहरण– बह्वरत्नि:। बह्वरत्नि:। बहुमास्य:। बहुमास्य:। बहुकपाल:। बहुकपाल:। बहुभगाल:। बहुभगाल:। बहुशराव:। बहुशराव:।।

सूत्र अर्थ का समन्वय–

बह्वरत्नि:– बहव: अरत्नय: प्रमाणम् अस्य इस विग्रह में तद्धित अर्थ में तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च इस सूत्र से द्विगुसमास करने पर बह्वरत्नि: यह रूप बनता है। यहाँ पूर्वपद बहु शब्द है, और उत्तरपद इगन्त है। अत: प्रकृतसूत्र से यहाँ पूर्वपद बहु शब्द को विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है। पक्ष में अनुदात्तस्वर होता है। यहाँ बहु+अरत्नि: इस अवस्था में यण आदेश करने पर बह्वरत्नि: यह शब्द बनता है। बहु शब्द अन्तोदात्त है। किन्तु यण आदेश होने से प्रकृति स्वर पक्ष में उदात्तस्वरितयोर्यण: स्वरितोऽनुदात्तस्य इस सूत्र से स्वरित स्वर होता है। उससे बह्वरत्नि:, बह्वरत्नि: ये दो रूप प्राप्त होते हैं।

बहुमास्य:– बहून् मासान् भृत: इस विग्रह में तद्धित अर्थ में द्विगुसमास करने पर और यप् प्रत्यय करने पर बहुमास्य: यह रूप होता है। यहाँ बहु शब्द पूर्वपद है। और उत्तरपद कालवाचक है। अत: प्रकृत सूत्र से यहाँ पूर्वपद बहु शब्द को विकल्प से प्रकृतिस्वर होता है। पक्ष में अनुदात्त स्वर होता है। उसके द्वारा बहुमास्य:, बहुमास्य: ये दो रूप बनते है।

बहुकपाल:– बहुषु कपालेषु संस्कृत: इस विग्रह में द्विगुसमास में बहुकपाल: यह रूप होता है। यहाँ अन्तोदात्त बहु शब्द पूर्वपद है। और उत्तरपद कपाल शब्द है। अत: प्रकृत सूत्र से यहाँ पूर्वपद बहु शब्द को विकल्प से प्रकृति स्वर होता है। पक्ष में अनुदात्त स्वर होता है। उसके द्वारा बहुकपाल:, बहुकपाल: ये दो रूप प्राप्त होते है।

बहुभगाल:– बहुषु भगालेषु संस्कृत: इस विग्रह में द्विगुसमास करने पर बहुभगाल: यह रूप बनता है। यहाँ अन्तोदात्त बहु शब्द पूर्वपद है। और उत्तरपद भगाल शब्द है। अत: प्रकृत सूत्र से यहाँ पूर्वपद बहु शब्द को विकल्प से प्रकृति स्वर होता है। पक्ष में अनुदात्त स्वर होता है। उससे बहुभगाल:, बहुभगाल: ये दो रूप होते हैं।

बहुशराव:– बहुषु शरावेषु संस्कृत: इस विग्रह में द्विगुसमास करने पर बहुशराव: यह रूप बनता है। यहाँ अन्तोदात्त बहु शब्द पूर्वपद है। और उत्तरपद शराव शब्द है। अत: प्रकृत सूत्र से यहाँ पूर्वपद बहु शब्द को विकल्प से प्रकृति स्वर अन्तोदात्त होता है। पक्ष में अनुदात्त स्वर होता है। उससे बहुभगाल:, बहुभगाल: ये दो रूप बनते है।

13.8 कार्तकौजपादयश्च।। (६.२.३७)

सूत्र का अर्थ– कार्तकौजपादि जो द्वन्द्व समासवाले शब्द उनके पूर्वपद को भी प्रकृत्ति स्वर होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्रकृतिस्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद है। कार्तकौजपादयः यह प्रथमान्त पद है। च यह अव्ययपद है। राजन्यबहुवचनद्वन्द्वेऽन्धकवृष्णिषु इस सूत्र से द्वन्द्वे इस पद की यहाँ अनुवृति आती है। बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् इस सूत्र से प्रकृत्या और पूर्वपदम् इन दो पद की यहाँ अनुवृति आती है। अतः सूत्र का अर्थ होता है - कार्तकौजपादि के द्वन्द्व समास में पूर्वपद को प्रकृत्ति स्वर होता है। अर्थात् कार्तकौजपादि शब्दों के मध्य में जो द्वन्द्व समास सिद्ध है, उनमें पूर्वपद को प्रकृति स्वर होता है।

उदाहरण- कार्तकौष्ज्जपौ।

सूत्र अर्थ का समन्वय- कृतस्य अपत्यम् इस अर्थ में कृत शब्द से अण् प्रत्यय करने पर कार्तः यह रूप बनता है। कुजपस्य अपत्यम् इस अर्थ में कुजप शब्द से अण् प्रत्यय करने पर कौजपः यह रूप बनता है। दोनों शब्द अण्प्रत्ययान्त है। अतः अन्तोदात्त है। कार्तश्च कौजपश्च इस विग्रह में द्वन्द्वसमास करने पर कार्तकौजपौ यह रूप है। द्वन्द्वसमास होने से प्रकृत सूत्र से कार्त इस पूर्वपद को अन्तोदात्त होता है।

पाठगत प्रश्न 13.2

1. 'विस्पष्टादीनि गुणवचनेषु' इस सूत्र से किसका विधान है?
2. विस्पष्ट शब्द आद्युदात्त अथवा अन्तोदात्त है?
3. किस समास में पूर्वपद कुमार शब्द को प्रकृति स्वर होता है?
4. 'कुमारश्च' इस सूत्र का एक उदाहरण दीजिए?
5. बहुमास्य यहाँ पर पूर्वपद को प्रकृतिस्वर किस सूत्र से होती है?
6. 'कार्तकौजपादयश्च' यह सूत्र किसका विधान करता है?
7. कार्त इसका क्या अर्थ है?

13.9 चतुर्थी तदर्थे (६.२.४३)

सूत्र का अर्थ- चतुर्थी पूर्वपद को चतुर्थ्यन्तार्थ के उत्तर पद रहते प्रकृति स्वर होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्रकृतिस्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद हैं। चतुर्थी यह प्रथमान्त पद है। तदर्थे यह सप्तम्यन्त पद है। बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् इस सूत्र से प्रकृत्या और पूर्वपदम् इन दो पदों की यहाँ अनुवृति आ रही है। चतुर्थी यह प्रत्यय का ग्रहण है। प्रत्यय ग्रहण करने से 'तदन्ताः ग्राह्याः' इस न्याय से उसके ग्रहण करने में चतुर्थ्यन्त यह है। अतः सूत्र का अर्थ है, चतुर्थ्यन्त पूर्वपद को चतुर्थ्यन्त उत्तरपद रहते प्रकृत्ति स्वर होता है। तस्मै

टिप्पणियाँ

इदम् यह तदर्थ है। तत् शब्द से यहाँ चतुर्थ्यन्तार्थ कहलाता है। अतः तदर्थ इसका चतुर्थ्यन्तार्थ के लिए यह अर्थ है।

उदाहरण- यूपदारु।

सूत्र अर्थ का समन्वय- यूपाय दारु इस विग्रह में यूपदारु यह रूप बनता है। यहाँ यूपाय यह चतुर्थ्यन्त पद है। चतुर्थ्यन्त यूप इसका जो अर्थ है वह उस शब्द से कहते है। उस यूप के लिए यह लकड़ी है। अतः दारु यह तदर्थ है। इसी प्रकार यूपदारु यहाँ पूर्वपद यूपाय यह चतुर्थ्यन्त पद है। उसके बाद दारु यह उत्तरपद है। अतः प्रकृत सूत्र से यूपदारु यहाँ पर यूप इस पूर्वपद में प्रकृति स्वर होता है। यूप शब्द आद्युदात्त होता है। अतः यूपदारु यहाँ समास के होने पर भी प्रकृत सूत्र से यूप शब्द आद्युदात्त ही रहता है।

विशेष- तदर्थ शब्द से यहाँ प्रकृति विकृति भाव का ही ग्रहण है। उससे रन्धनाय स्थाली इत्यादि में स्थाली रन्धन के लिए उसके अर्थ के लिए नहीं हो सकती है, क्योंकि यहाँ रन्धन स्थाली के मध्य में प्रकृति विकृति भाव नहीं है।

13.10 अर्थे (६.२.४४)

सूत्र का अर्थ- अर्थ शब्द उत्तर पद रहते चतुर्थ्यन्त पूर्वपद को प्रकृत्ति स्वर होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्रकृतिस्वर का विधान है। इस सूत्र में एक ही पद है। अर्थे यह सप्तम्यन्त पद है। चतुर्थी तदर्थे इस सूत्र से चतुर्थी इस पद की यहाँ अनुवृति आ रही है। बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् इस सूत्र से प्रकृत्या और पूर्वपदम् इन दो पदों की यहाँ अनुवृति आती है। चतुर्थी यह प्रत्यय का ग्रहण है। प्रत्यय ग्रहण करने पर तदन्ताः ग्राह्याः इस न्याय से तदन्त ग्रहण करने में चतुर्थ्यन्त होती है। अतः सूत्र का अर्थ होता है - चतुर्थ्यन्त पूर्वपद को अर्थ उत्तरपद रहते प्रकृत्ति स्वर होता है।

उदाहरण- मात्रार्थम्।

सूत्र अर्थ का समन्वय- मात्रे इदम् इस विग्रह में मात्रार्थम् यह रूप बनता है। मातृ शब्द अन्तोदात्त है। मात्रार्थम् यहाँ पर अर्थ शब्द उत्तरपद में है। अतः प्रकृत सूत्र से मात्रार्थम् यहाँ पर समास के होने पर भी पूर्वपद मातृ शब्द को अन्तोदात्त होता है।

13.11 क्ते च (६.२.४५)

सूत्र का अर्थ- क्तान्त शब्द उत्तरपद रहते भी चतुर्थ्यन्त पूर्वपद को प्रकृत्ति स्वर होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्रकृतिस्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद है। क्ते यह सप्तम्यन्त पद है। च यह अव्ययपद है। चतुर्थी तदर्थे इस सूत्र से चतुर्थी इस पद की अनुवृति है। बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् इस सूत्र से प्रकृत्या और पूर्वपदम् इन दो पदों की यहाँ अनुवृति है। चतुर्थी इससे प्रत्यय का ग्रहण है। प्रत्यय ग्रहण करने पर तदन्ताः ग्राह्याः इस न्याय से तदन्त

ग्रहण में चतुर्थ्यन्त होती है। क्ते क्त प्रत्यय करने पर यह अर्थ है। यहाँ पर भी प्रत्यय ग्रहण करने पर तदन्ता: ग्राह्या: इस न्याय से तदन्तविधि में क्तान्त यह रूप होता है। उत्तरपदे इसका यहाँ अध्याहार किया गया है। अत: सूत्र का अर्थ होता है - क्तान्त उत्तरपद रहते चतुर्थ्यन्त पूर्वपद को प्रकृत्ति स्वर होता है।

उदाहरण- गोहितम्। अश्वंहितम्। मनुष्यंहितम्। गोरक्षितम्। अश्वंरक्षितम्।

सूत्र अर्थ का समन्वय- गोभ्य: हितम् इस विग्रह में चतुर्थी तदर्थार्थवलिहितसुखरक्षितै: इस सूत्र से चतुर्थीतत्पुरुष समास होने पर गोहितम् यह रूप बनता है। यहाँ पूर्वपद गवे यह चतुर्थ्यन्त है। और उत्तरपद हितम् यह क्त प्रत्ययान्त है। गो शब्द अन्तोदात्त है। अत: प्रकृत सूत्र से गोहितम् यहाँ समास होने पर भी गो यहाँ इसका प्रकृतिस्वर ही होता है। उससे गो शब्द अन्तोदात्त ही रहता है।

इसी प्रकार अश्वंहितम्, मनुष्यंहितम्, गोरक्षितम् अश्वंरक्षितम् इत्यादि में भी होता है। अश्व शब्द आद्युदात्त है। मनुष्य शब्द अन्त स्वरित है।

13.12 कर्मधारयोऽनिष्ठा (६.२.४६)

सूत्र का अर्थ:- कर्मधारय समास में क्तान्त उत्तरपद रहते अनिष्ठान्त पूर्वपद को प्रकृत्ति स्वर होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्रकृतिस्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद है। कर्मधारय यह सप्तम्यन्त पद है। अनिष्ठा यह प्रथमान्त पद है। जो निष्ठा नहीं है वह अनिष्ठा। क्ते च इस सूत्र से क्ते इस पद की अनुवृति आती है। क्ते यह प्रत्यय है। प्रत्यय ग्रहण करने पर तदन्ता: ग्राह्या: इस न्याय से तदन्तविधि में क्तान्ते यह रूप होता है। निष्ठा इससे क्त प्रत्यय का और क्तवतु प्रत्यय का परामर्श है। क्तक्तवतू निष्ठा यह सूत्र यहाँ प्रमाण है। निष्ठा यह प्रत्यय होने से प्रत्यय ग्रहण करने पर तदन्ता: ग्राह्या: इस न्याय से तदन्तविधि में निष्ठान्त यह रूप होता है। अत: अनिष्ठा इसका अनिष्ठान्त यह अर्थ है। बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् इस सूत्र से प्रकृत्या और पूर्वपदम् इन दो पदों की यहाँ अनुवृति है। उत्तर पदे इसका यहाँ अध्याहार किया गया है। अत: सूत्र का अर्थ होता है - क्तान्त उत्तरपद रहते अनिष्ठान्त पूर्वपद को प्रकृतिस्वर होता है।

उदाहरण- श्रेणिंकृता:। ऊककृंता:। पूगकृंता:।

सूत्र अर्थ का समन्वय- श्रेणि: च असौ कृत: इस विग्रह में श्रेण्यादय: कृतादिभि: इस सूत्र से कर्मधारय समास करने पर बहुवचन में श्रेणिकृता: यह रूप बनता है। यहाँ पूर्वपद श्रेणि शब्द है। श्रेणि यह क्त प्रत्ययान्त भी नहीं है और क्तवतु प्रत्ययान्त भी नहीं है। अत: पूर्वपद यहाँ अनिष्ठान्त है। और उत्तरपद क्त प्रत्ययान्त है। अत: प्रकृत सूत्र से श्रेणिकृता: यहाँ समास होने पर भी श्रेणि शब्द को प्रकृति स्वर होता है। श्रेणि शब्द का आद्युदात्त है। उससे श्रेणिष्कृता: यह रूप होता है।

इसी प्रकार ऊककृंता:, पूगकृंता: इत्यादि में भी जानना चाहिए। ऊक् शब्द और पूग शब्द अन्तोदात्त है।

टिप्पणियाँ

विशेष- कर्मधारय समास में ही इस सूत्र से प्रकृतिस्वर का विधान है। अन्य जगह नही। जैसे श्रेणिकृता: यहाँ पर यदि श्रेण्या कृता: इस विग्रह में तृतीयातत्पुरुष समास स्वीकार करते तो कर्मधारय समास के अभाव से प्रकृत सूत्र से श्रेणि यहाँ पर प्रकृति स्वर नहीं होता है।

किन्तु पूर्वपद अनिष्ठान्त ही होता है। कृताकृतम् यहाँ पर कृतञ्च तत् अकृतम् इस विग्रह में कर्मधारय समास करने पर कृताकृतम् यह रूप बनता है। यहाँ कर्मधारय समास है। उत्तरपद क्त प्रत्ययान्त भी है। किन्तु पूर्वपद निष्ठान्त है। अत: प्रकृत सूत्र से कताकृतम् यहाँ पर कृत इस पूर्वपद को प्रकृतिस्वर नहीं होता है।

13.13 तृतीया कर्मणि॥ (६.२.४८)

सूत्र का अर्थ- कर्मवाचि क्तान्त उत्तरपद रहते तृतीयान्त पूर्वपद को प्रकृत्ति स्वर होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्रकृतिस्वर का विधान है। इस सूत्र में दो पद है। तृतीया यह प्रथमान्त पद है। कर्मणि यह सप्तम्यन्त पद है। क्ते च इस सूत्र से क्ते इस पद की यहाँ अनुवृति है। क्त यह एक प्रत्यय है। प्रत्यय ग्रहण करने पर तदन्ता: ग्राह्या: इस न्याय से तदन्तविधि में क्तान्ते यह रूप होता है। बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् इस सूत्र से प्रकृत्या और पूर्वपदम् इन दो पदों की यहाँ अनुवृति है। पूर्वपद सामर्थ्य से उत्तरपदे इस पद का यहाँ अध्याहार किया गया है। अत: सूत्र का अर्थ है - कर्मवाचि क्तान्त उत्तरपद रहते तृतीयान्त पूर्वपद को प्रकृतिस्वर होता है।

उदाहरण- अहिहत:। नखनिर्भिन्न:। दात्रलून:।

सूत्र अर्थ का समन्वय- अहिना हत: इस विग्रह में तृतीयातत्पुरुष समास होने पर अहिहत: यह रूप बनता है। हन्-धातु से कर्म में क्त प्रत्यय करने पर हत: यह रूप बनता है। अत: उत्तरपद यहाँ कर्मवाचक क्त प्रत्ययान्त है। और पूर्वपद तृतीयान्त है। अत: प्रकृत सूत्र से अहिहत: यहाँ पर अहि शब्द को प्रकृति स्वर होता है। अहि शब्द अन्तोदात्त है। अत: अन्तोदात्त ही रहता है। उसके द्वारा अघहिहघ्त: ही प्रयोग होता है।

इसी प्रकार नखनिर्भिन्न:, दात्रलून: इत्यादि में भी जानना चाहिए। नख शब्द अन्तोदात्त है। दात्र शब्द आद्युदात्त है।

पाठगत प्रश्न 13.3

1. 'चतुर्थी तदर्थे' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
2. 'यूपदारु' इसका विग्रह वाक्य क्या है?
3. 'मात्रार्थम्' यहाँ पर पूर्वपद मातृ शब्द किस सूत्र से अन्तोदात्त होता है?
4. 'मात्रर्थम्' इसका विग्रह वाक्य क्या है?

5. क्तान्त उत्तरपद रहते किस सूत्र से चतुर्थ्यन्त को प्रकृत्ति स्वर होता है?
6. श्रेणिकृता: यहाँ पर कौन सा समास स्वीकार करते है, तो पूर्वपद को प्रकृति स्वर होता है? किस सूत्र से?
7. निष्ठा संज्ञा किस-किस की होती है?
8. कब तृतीयान्त पूर्वपद को प्रकृत्ति स्वर होता है?
9. नखनिर्भिन्न: यहाँ पर पूर्वपद को प्रकृतिस्वर किस सूत्र से होता है?

13.14 गतिरनन्तर:॥ (६.२.४९)

सूत्र का अर्थ- कर्मवाची क्तान्त उत्तरपद रहते पूर्वपदस्थ अव्यवहित गति को प्रकृत्ति स्वर होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्रकृति स्वर का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। गति: यह प्रथमान्त पद है। अनन्तर: यह भी प्रथमान्त पद है। अनन्तर: इसका अव्यवहित यह अर्थ है। तृतीया कर्मणि इस सूत्र से कर्मणि इसकी अनुवृति आती है। क्ते च इस सूत्र से क्ते इस पद की अनुवृति आती है। क्त यह एक प्रत्यय है। प्रत्यय ग्रहण करने में तदन्ता: ग्राह्या: इस न्याय से तदन्तविधि में क्तान्ते यह रूप होता है। बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् इस सूत्र से प्रकृत्या और पूर्वपदम् इन दो पदों की यहाँ अनुवृति आ रही है। उत्तरपदे इसका अध्याहार किया गया है। अत: सूत्र का अर्थ होता है - कर्मवाचि क्तान्त उत्तरपद रहते अव्यवहित गति पूर्वपदस्थ को प्रकृत्ति स्वर होता है।

उदाहरण- प्रकृ॑त:। प्रहृत:।

सूत्र अर्थ का समन्वय- प्रकृत: यहाँ पर कुगतिप्रादय: इस सूत्र से गति समास हुआ है। यहाँ कृत यह क्त प्रत्ययान्त उत्तरपद है। क्त प्रत्यय यहाँ कर्म में विहित है। क्त प्रत्ययान्त का अव्यवहित पूर्वपद प्र यह है। प्र यह गति संज्ञक और आद्युदात्त है। अत: प्रकृत सूत्र से प्र यहाँ इसका प्रकृति स्वर है। उस के द्वारा आद्युदात्त होने से प्रकृत: यह रूप ही होता है। इसी प्रकार प्रहृत: यहाँ पर भी। समास के होने पर भी प्रकृत: यहाँ पर प्रकृत सूत्र से प्रकृति स्वर अर्थात् अन्तोदात्त होता है।

13.15 कतरकतमौ कर्मधारये॥ (६.२.५७)

सूत्र का अर्थ- कतर तथा कतम पूर्वपद को कर्मधारय समास में विकल्प से प्रकृत्ति स्वर होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्रकृतिस्वर का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। कतरकतमौ यह प्रथमान्त समस्त पद है। कतरश्च कतमश्च कतरकतमौ यहाँ द्वन्द्व है। कर्मधारये यह सप्तम्यन्त पद है। ईषदन्यतरस्याम् इस सूत्र से अन्यतरस्याम् इस पद की अनुवृति

टिप्पणियाँ

आती है। बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् इस सूत्र से प्रकृत्या और पूर्वपदम् इन दो पदों की अनुवृति है। अत: सूत्र का अर्थ है – कर्मधारय समास में पूर्वपद कतर और कतम शब्द को विकल्प से प्रकृति स्वर होता है।

उदाहरण– कतरकंठ:। कतरकठ:। कतमकंठ:। कतमकठ:।

सूत्र अर्थ का समन्वय– कतर और कतम शब्द अन्तोदात्त है। कतरश्चासौ कठ: इस विग्रह में कर्मधारय समास करने पर कतरकठ: यह रूप बनता है। इस कर्मधारय समास में पूर्वपद कतर शब्द है। अत: प्रकृत सूत्र से कतर शब्द को विकल्प से प्रकृति स्वर होता है। अत: एक पक्ष में अन्तोदात्त होता है, दूसरे पक्ष में समासस्य से अन्त उदात्त होता है। उस के द्वारा कतरकंठ: और कतरकठ: ये दोनों रूप प्राप्त होते है।

इसी प्रकार कतमकठ: यहाँ पर भी कतमश्चासौ कठ: इस विग्रह में कर्मधारय समास करने पर कतमकठ: यह रूप बनता है। यहाँ पर भी पूर्व के समान कतम शब्द को प्रकृत सूत्र से विकल्प से प्रकृति स्वर होता है। उस के द्वारा कतमकंठ: और कतमकठ: ये दोनों रूप सिद्ध होते है।

13.16 आचार्योपसर्जनश्चाऽन्तेवासिनि॥ (६.२.१०४)

सूत्र का अर्थ– आचार्य है अप्रधान जिसका, ऐसा जो अन्तेवासी, उसको कहने वाले शब्द के परे रहते भी दिशा अर्थ में प्रयुक्त होने वाले पूर्वपद शब्द को अन्तोदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या– यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से अन्तोदात्त स्वर का विधान है। इस सूत्र में तीन पद है। आचार्योपसर्जन: यह प्रथमान्त पद है। च यह अव्यय पद है। अन्तेवासिनि यह सप्तम्यन्त पद है। आचार्योपसर्जन: यह अन्तेवासिनि इसका विशेषण है। आचार्योपसर्जन: यहाँ पर सप्तम्य अर्थ में प्रथमा की गई है। उपसर्जन अप्रधान को कहते है। आचार्य उपसर्जन अप्रधान है जिसका वह आचार्योपसर्जन है। आचार्य उपसर्जन अन्तेवासी है आचार्योपसर्जनान्तेवासी। उसको कहने के लिए। उत्तरपदे इसका यहाँ अध्याहार किया गया है। दिक्शब्दा: ग्रामजनपदाख्यानचान –राटेषु इस सूत्र से दिक्शब्दा: इस पद की यहाँ अनुवृति आती है। अन्त: इसका यहाँ अधिकार यहाँ आता है। आदिरूदात्त: इस सूत्र से उदात्त: इस पद की यहाँ अनुवृति आती है। बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् इस सूत्र से पूर्वपदम् इस पद की यहाँ अनुवृति आती है। और वह पूर्वपद यह बहुवचनान्त से व्यत्यय किया गया है। अत: सूत्र का अर्थ होता है आचार्य उपसर्जन अन्तेवासी उत्तरपद रहते दिक्शब्द पूर्वपद अन्तोदात्त होता है।

उदाहरण– पूर्वपाणिनीया:। अपरपाणिनीया:। पूर्वकांशकृत्स्ना:। अपरकांशकृत्स्ना:।

सूत्र अर्थ का समन्वय– पूर्वा: च इमे पाणिनीया: इस विग्रह में पूर्वपाणिनीया: यह रूप बनता है। यहाँ पूर्वपदं पूर्व यह शब्द है। और वह दिशावाची है। अत: दिक्शब्द यहाँ पूर्वपद है। पाणिनि आचार्य के अन्तेवासि वे पाणिनीय कहलाते हैं। यहाँ अन्तेवासी प्रधानता से कहा जाता है, आचार्य तो उसका विशेषण होने से उपसर्जन भाव से कहलाते है। इस प्रकार पाणिनी यह आचार्य उपसर्जन

अन्तेवासीवाचि उत्तरपद को होता है। उसी प्रकार उत्तरपद होने पर पूर्वपद दिक्शब्द को प्रकृत सूत्र से अन्तोदात्त होता है। उससे पूर्वपाणिनीयाः यह रूप बनता है।

इसी प्रकार अपरपाणिनीयाः, पूर्वकाशकृत्स्नाः, अपरकाशकृत्स्नाः इत्यादि में भी जानना चाहिए।

13.17 बहुव्रीहौ विश्वं संज्ञायाम्॥ (६.२.१०६)

सूत्र का अर्थ- बहुव्रीहि समास में संज्ञा विषय में पूर्वपद विश्व शब्द को अन्तोदात्त होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह सूत्र विधिसूत्र है। इस सूत्र से अन्तोदात्त का विधान होता है। इस सूत्र में तीन पद विराजमान है। बहुव्रीहौ यह सप्तम्यन्त पद है। विश्वम् यह प्रथमान्त पद है। संज्ञायाम् यह सप्तम्यन्त पद है। यहाँ विषयसप्तमी यह समझना चाहिए। अन्तः इसका अधिकार यहाँ आता है। उदात्तः इस पद की यहाँ अनुवृति आती है। बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् इस सूत्र से पूर्वपदम् इस पद की यहाँ अनुवृति आती है। अतः सूत्र का अर्थ होता है - बहुव्रीहि समास में संज्ञा विषय में विश्व शब्द पूर्वपद को अन्तोदात्त होता है।

उदाहरण- विश्वदेंवः। विश्वयंशाः। विश्वमंहान्।

सूत्र अर्थ का समन्वय- विश्वः देवः यस्य इस विग्रह में विश्वदेवः यह रूप बनता है। यहाँ बहुव्रीहि समास हुआ है। विश्व शब्द यहाँ पूर्वपद है। अतः प्रकृत सूत्र से विश्व शब्द अन्तोदात्त होता है। उससे विश्वदेंवः यह रूप होता है।

इसी प्रकार विश्वयंशाः, विश्वमंहान् इत्यादि में भी जानना चाहिए।

विशेष- विश्वदेवाः इत्यादि में यदि विश्वे च ते देवाः इस विग्रह में तत्पुरुष समास स्वीकार करते है, तो प्रकृत सूत्र से यहाँ विश्वशब्द को अन्तोदात्त नहीं होता है।

13.18 देवताद्वन्द्वे च॥ (६.२.१४१)

सूत्र का अर्थ- देवतावाची शब्दों का जो द्वन्द्वसमास उसमे भी एक साथ दोनों अर्थात् पूर्व और उत्तरपद को प्रकृत्ति स्वर होता है।

सूत्र की व्याख्या- यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से प्रकृति स्वर का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। देवताद्वन्द्वे यह सप्तमी एकवचनान्त पद है। देवताओं का द्वन्द्व देवता द्वन्द्व उसमें देवता द्वन्द्व में यहाँ पर षष्ठीतत्पुरुष समास है। देवता वाची शब्दों का द्वन्द्व समास में यह अर्थ है। उभे वनस्पत्यादिषु युगपत् इस सूत्र से उभे इस प्रथमा द्विवचनान्त पद की और युगपत् इस प्रथमा एकवचनान्त पद की अनुवृति है। उभे इसका पूर्व और उत्तरपद में यह अर्थ है। बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम् इस सूत्र से प्रकृत्या इस तृतीयान्त पद की यहाँ अनुवृति है। उससे इस सूत्र का अर्थ होता है - देवता वाचियों का जो द्वन्द्वसमास वहा एक साथ पूर्व और उत्तरपद में प्रकृत्तिस्वर होता है। अर्थात् पूर्व का जैसा स्वर था, वैसे ही रहता है।

उदाहरण– आ य इन्द्रारुणौ। इन्द्रावृहस्पतीं वयम् इति ये दो इस सूत्र के उदाहरण।

सूत्र अर्थ का समन्वय– इन्द्रारुणौ यहाँ पर देवतावाचियों का द्वन्द्वसमास है। इन्द्रश्च वरुणश्च यह यहाँ विग्रह है। अतः उन दोनों का जैसे पूर्व का स्वर था वैसे ही रहता है। इसी प्रकार इन्द्रावृहस्पती यहाँ पर भी।

पाठगत प्रश्न 13.4

1. 'गतिरनन्तर' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
2. कतर शब्द आद्युदात्त है अथवा अन्तोदात्त है?
3. आचार्योपसर्जनश्चाऽन्तेवासिनि यहाँ पर उपसर्जन किसको कहते है?
4. पूर्वपाणिनीयाः यहाँ पर किस सूत्र से पूर्वशब्द को अन्तोदात्त का विधान है?
5. कतमकठः यहाँ पर क्या समास है?
6. विश्वशब्दः अन्तोदात्त कब होता है?
7. 'देवताद्वन्द्वे च' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

पाठ का सार

पूर्व के पाठों में धातुस्वर, प्रातिपदिक स्वर, फिट्-स्वर, और प्रत्यय स्वर हमारे द्वारा पढ़े गए हैं। इस प्रकृत पाठ में हमारे द्वारा समास स्वर की आलोचना की है। जैसे समासस्य इस सूत्र से अन्त उदात्त होता है। जैसे राजपुरुषः इस समास स्थान में अन्त्य अकार को उदात्त होता है। हमारे द्वारा समास आदि पाठ पढने के समय ज्ञात हुआ है की समास में पूर्वपद और उत्तरपद रहते हैं। साधारण होने से राजपुरुषः इत्यादि स्थानों में समासस्य इस सूत्र से अन्त्य यह कहने से उत्तरपद के अन्तिम अकार को उदात्त होता है। तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्ययद्वितीयाकृत्याः इत्यादि सूत्र से पूर्वपद को प्रकृति स्वर का विधान है। प्रकृतिस्वर यह कहने से समास होने से पहले जो स्वाभाविक स्वर था, समास करने के बाद भी वह ही स्वर रहता है। तत्पुरुषसमास होने पर पूर्वपद यदि तुल्यार्थवाचक, तृतीयान्त, सप्तम्यन्त, उपमानवाचक, अव्यय, अथवा कृत्यप्रत्ययान्त है तो पूर्वपद को प्रकृत्ति स्वर होता है। जैसे तुल्यश्वेतः। तुल्यशब्द का समास होने से पहले आद्युदात्त जैसे था, वैसे ही समास करने के बाद भी आद्युदात्त ही होता है। वा भुवनम्, पूर्वे भूतपूर्वे इत्यादि सूत्र से पूर्वपद को विकल्प से प्रकतिस्वर होता है। देवतावाची द्वन्द्व समास में एक साथ दोनों को प्रकृत्ति स्वर होता है। अर्थात् देवतावाची द्वन्द्व समास में पूर्वपद को और उत्तरपद दोनों को प्रकृत्ति स्वर होता है। इन्द्रारुणौ यहाँ पर देवतावाचक द्वन्द्वसमास है। इन्द्रश्च वरुणश्च यह यहाँ विग्रह है। अतः दोनों (पूर्वपद और उत्तपद को) जैसे पूर्व स्वर था वैसे ही समास होने के बाद भी रहता है।

पाठांत प्रश्न

इन सूत्रों की व्याख्या कीजिए –

1. तत्पुरुषे तुल्यार्थतृतीयासप्तम्युपमानाव्ययद्वितीयाकृत्याः
2. कुमारश्च
3. बह्वन्यतरस्याम्
4. कार्तकौजपादयश्च
5. चतुर्थी तदर्थे
6. कर्मधारयोऽनिष्ठा
7. गतिरनन्तरः
8. आचार्योपसर्जनश्चाऽन्तेवासिनि

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

13.1

1. समास का अन्त उदात्त होता है।
2. तुल्य शब्द आद्युदात्त है।
3. अक्षशौण्डः इसका विग्रह वाक्य अक्षेषु शौण्डः है।
4. भौज्योष्णम् यहाँ पूर्वपद को प्रकृति स्वर तत्पुरुष समास में तुल्यार्थ तृतीया सप्तम्युप मानाव्ययद्वितीयाकृत्याः इस सूत्र से किया गया है।
5. वा भुवनम् इस सूत्र का अर्थ है ऐश्वर्यवाची अर्थ में तत्पुरुष समास में पति उत्तरपद रहते भुवन पूर्वपद को विकल्प से प्रकृति स्वर होता है।
6. भुवनपतिः यहाँ भुवन शब्द आद्युदात्त है।
7. पूर्वे भूतपूर्वे इस सूत्र से पूर्व शब्द उत्तरपद रहते भूतपूर्ववाची अर्थ में तत्पुरुष समास में पूर्वपद को प्रकृति स्वर होता है।

टिप्पणियाँ

13.2

1. विस्पष्टादीनि गुणवचनेषु इस सूत्र से गुणवचन उत्तरपद में विस्पष्टादि पूर्वपदों को प्रकृतिस्वर होता है।
2. विस्पष्ट शब्द आद्युदात्त है।
3. कर्मधारय समास में कुमार शब्द पूर्वपद को प्रकृत्ति स्वर होता है।
4. कुमारश्च इस सूत्र का एक उदाहरण है कुमारश्रमण।
5. बहुमास्य यहाँ पर पूर्वपद को प्रकृति स्वर होने का विधान बह्वन्यतरस्याम् इस सूत्र से है।
6. कार्तकौजपादयश्च इस सूत्र से कार्तकौजपादि जो द्वन्द्व हैं, उनमे पूर्वपद को प्रकृतिस्वर होने का विधान है।
7. कृत का अपत्य इस अर्थ में कार्तः शब्द है।

13.3

1. चतुर्थी तदर्थे इस सूत्र का चतुर्थ्यन्तार्थ के उत्तर पद रहते चतुर्थी पूर्वपद को प्रकृति स्वर होता है।
2. यूपदारु इसका विग्रह वाक्य होता है- यूपाय दारु।
3. मात्रार्थम् यहाँ पर पूर्वपद मातृ शब्द को अर्थ इस सूत्र से अन्तोदात्त होता है।
4. मात्रर्थम् इसका विग्रह वाक्य होता है - मात्रे इदम्।
5. क्तान्ते च उत्तरपदे क्ते च इस सूत्र से।
6. श्रेणिकृताः यहाँ पर कर्मधारय समास स्वीकार करते है, तो पूर्वपद को प्रकृति स्वर होता है। कर्मधारयोऽनिष्ठा इस सूत्र से।
7. क्त प्रत्यय की और क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा होती है।
8. कर्मवाचि क्तान्त उत्तरपद रहते तृतीयान्त पूर्वपद को प्रकृत्ति स्वर होता है।
9. नखनिर्भिन्नः यहाँ पर पूर्वपद को प्रकृति स्वर तृतीया कर्मणि इस सूत्र से है।

13.4

1. गतिरनन्तरः इस सूत्र का अर्थ है कर्मवाची क्तान्त उत्तरपद रहते गतिरनन्तर पूर्वपद को प्रकृत्ति स्वर होता है।

2. कतर शब्द अन्तोदात्त होता है।

3. आचार्योपसर्जनश्चाऽन्तेवासिनि यहाँ पर उपसर्जन नाम अप्रधान को कहते है।

4. पूर्वपाणिनीया: यहाँ पर आचार्योपसर्जनश्चाऽन्तेवासिनि इस सूत्र से पूर्वशब्द को अन्तोदात्त होने का विधान है।

5. कतमकठ: यहाँ पर कर्मधारय समास है।

6. बहुव्रीहि समास में विश्वशब्द पूर्वपद होने से संज्ञा में अन्तोदात्त होता है।

7. देवतावाची का द्वन्द्व समास में एक साथ दोनों को प्रकृत्ति स्वर होता है।

॥ तेरहवाँ पाठ समाप्त॥